14

बच्चों के अनुभव और हिंदी पाठ्यपुस्तकें

अभिलाषा बजाज*

शिक्षा का अन्त्य उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास है। सर्वांगीण विकास के अंतर्गत व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक विकास समाहित है। शिक्षा, समाज का दायित्व है और साथ ही यह समाज की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं का परिचायक भी मानी जाती है। शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति, अपनी धारणाओं एवं अपनी परंपरा को नई पीढ़ी में हस्तांतरित करने का कार्य करता है। जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया होने के साथ ही शिक्षा का लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति में पूर्णता का विकास करना है जिसकी सिद्धि की क्षमता उसमें विद्यमान होती है। कहा जा सकता है कि शिक्षा मनुष्य को सांस्कृतिक एवं संस्कारित मानव में विकसित करने का प्रयास भी है।

प्रस्तुत लेख में विद्यार्थियों में सामाजिक अनुभवों के आधार पर गतिविधियों के माध्यम से उनका शारिरिक एवं मानसिक विकास की क्रियाओं की चर्चा की गई है। इसके साथ यह भी दर्शाने का प्रयास किया गया है कि हिंदी पाठ्यपुस्तकें किस प्रकार विद्यार्थियों में सामाजिक अनुभवों को विकसित करती हैं।

विद्यालय के भीतर औपचारिक रूप से तथा उसके बाहर अनौपचारिक रूप से मानव को शिक्षित करने के साथ-साथ उसे स्वयं की जीवन यात्रा के लिए सक्षम बनाना शिक्षा का मूल उद्देश्य है। औपचारिक शिक्षा संस्थानों के तौर पर विद्यालय विद्यार्थियों को स्वयं के बारे में सीखने, दूसरों व समाज के बारे में जानने के लिए अवसर प्रदान करते हैं। औपचारिक शिक्षा जहाँ एक ओर विद्यार्थियों को सक्षम जीवन के प्रति समझ व दुनिया से जुड़ने की नयी संभावनाएँ खोलती है, वहीं दूसरी ओर समाज में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा विद्यार्थियों में अपना ज्ञान स्वयं सृजित करने की स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती भी है, जिससे उनमें अपने आस-पास के सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से और विभिन्न कार्यों से जुड़ने की क्षमता बढ़ती है।

विद्यार्थी का समुदाय और उसका स्थानीय वातावरण अधिगम प्राप्ति के लिए प्राथमिक संदर्भ होता है। सीखने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग हैं — आसपास का वातावरण, प्रकृति, चीज़ों व लोगों से कार्य व भाषा, दोनों के माध्यम से अंत:क्रिया करना। स्वयं करके पाया/सीखा गया ज्ञान स्वयं का अनुभव कहलाता है। "बच्चों के अनुभवों एवं उनकी

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सक्रिय भागीदारी को महत्ता देती है। शिक्षा को एक सक्रिय सामाजिक गतिविधि के रूप में देखते हुए यह पाठ्यचर्या बच्चे की स्वायतत्ता, रचनात्मकता, सीखने की सहज इच्छा, उत्सुकता आदि पर बल देती है। पाठ्यचर्या के अनुसार बच्चे उसी वातावरण में सीखते हैं जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्वपूर्ण माना जाता है। उनकी विधि क्षमताओं को मान्यता मिले और यह माना जाए कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता है। इसके लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* का यह दस्तावेज़ बाहरी ज्ञान को विद्यालय एवं किताबों से जोड़ने, रटंत शिक्षा पद्धति से दूर हटाने तथा परीक्षा प्रणाली को लचीला बनाकर कक्षा की गतिविधियों से जोड़ने पर बल देता है।"

(*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005*)

ड्यूई (1997) का मानना है कि शिक्षा, व्यक्ति को सामाजिक चेतना में भाग लेने के योग्य बनाने की प्रक्रिया को विनियमित करती है। शिक्षा के अभिकरण के रूप में विद्यालय एक ज़िम्मेदार संस्था है। शिक्षा के सुखकारी परिणामों के लिए विद्यालयी वातावरण का सजीव एवं क्रियाशील होना आवश्यक शर्त है। परंतु जब विद्यालय बाहरी वातावरण की शिक्षामयी अवस्थाओं से अपना संबंध तोड़ लेते हैं तब वे सिर्फ़ किताबी या बौद्धिक ज्ञान को ही सामाजिक ज्ञान का साधन बना लेते हैं। यह शिक्षा के तथा बच्चे के स्वभाव से विपरीत की स्थिति है। अत: आवश्यक है कि बच्चे के अपने सामाजिक क्रियाकलाप ही पाठ्यचर्या का केंद्र बनें।

पॉलो फ्रेरे (1974) की दृष्टि में शिक्षा 'संप्रेषण और संवाद' का मिलाजुला रूप है। संप्रेषण के सभी गुण, जैसे वक्ता और श्रोता के बीच एक तालमेल बनना, दी जाने वाली सामग्री को दूसरों को पहुँचाने योग्य बनाना और दोनों के बीच अनुकूल माध्यम का होना आदि के साथ संवाद का जुड़ना ज़रूरी है। संवाद की प्रमुख विशेषता दोनों पक्षों के सजग व सचेत रहने में समाई है। तर्क और अनुभव संवाद के आधार के रूप में काम करते हैं। यह वह शिक्षा है जो विद्यार्थी को अपनी सामाजिक परिस्थितियों में एक सार्थक व सक्रिय दखल अंदाज़ी के योग्य बनाए।

विद्यार्थी को जीवन अनुभव प्रदान करने में पाठ्यपुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पाठ्यपुस्तकों में विद्यार्थी के स्तर के अनुसार प्रत्येक विषय की सामग्री का संकलन किया जाता है। उसी सामग्री तथा उससे इतर अन्य सामग्री का उपयोग करके शिक्षक विद्यार्थियों तक ज्ञान का अंतरण करते हैं किंतु वह ज्ञान तब तक समझ में परिवर्तित नहीं होता और उनके जीवन का अभिन्न अंग नहीं बनता जब तक शिक्षक पाठ्यवस्तु से विद्यार्थियों के अनुभवों को जोड़कर उस पर चर्चा, विवेचन-विश्लेषण नहीं करते। विद्यार्थी जब तक अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण को पाठ्यपुस्तकों में निरूपित संदर्भों के संबंध में स्थित नहीं कर पाते और इस ज्ञान को समाज के अपने अनुभवों से जोड़ नहीं पाते, तब तक ज्ञान मात्र सूचना के स्तर पर ही रहता है।

इसी परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए यह जिज्ञासा होने लगती है कि स्कूली विषय के रूप में माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए निर्धारित कक्षा आठ की पाठ्यपुस्तकें एवं शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों के अनुभवों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनाने में कहाँ तक योगदान करती हैं।

इस शोध पत्र में कक्षा 6, 7 और 8 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' के चयनित पाठों की विषय-वस्तु विश्लेषण के साथ ही यह जानने का प्रयास किया गया है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों को विस्तार दिया जाता है अथवा नहीं? इस प्रक्रिया में दिल्ली के राजकीय सर्वोदय विद्यालय, राष्ट्रीय प्रतिभा विकास विद्यालय एवं पब्लिक विद्यालयों के 16 शिक्षकों को शामिल किया गया। चयनित कक्षाओं के भाषाध्यापकों की कक्षाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रेक्षण एवं अवलोकन किया गया तथा यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या अध्यापक अपनी शिक्षण विधियों के माध्यम से कक्षा शिक्षण में उन प्रसंगों पर चर्चा कर पाएँ, जिनके द्वारा विद्यार्थी पाठ से जुड़ाव का अनुभव कर सकें।

विषय-वस्तु विश्लेषण के द्वारा यह पता चला कि उपरोक्त पाठ विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों को अवकाश प्रदान करने वाले अवसरों की दृष्टि से समर्थ हैं। जैसे 'चिड़िया की बच्ची' पाठ के एक प्रसंग में जब चिड़िया डर कर अपनी माँ से चिपट जाती है तो पाठकगण इस घटना को स्वयं से जोड़कर देखने लगते हैं। माँ के सामने कुछ छिपाना भी बच्चों के लिए आसान नहीं होता। इसीलिए अकसर माँ से कुछ बातें छिपाते हुए बच्चे उनसे आँखें मिलाकर बात नहीं कर पाते जैसे 'अपूर्व अनुभव' पाठ में "घर से निकलते समय तोत्तोचान ने माँ से कहा कि वह यासूकी चान के घर डेनेनचोफु जा रही है। चूँकि वह झूठ बोल रही थी, इसीलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। वह अपनी नज़रें जूतों के फ़ीतों पर ही गड़ाए रही" (वसंत, पृष्ठ 76)। 'कंचा' कहानी में भी अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जो विद्यार्थी जीवन में लगभग हर कक्षा का हिस्सा होते हैं। समय से विद्यालय न पहुँच पाने पर अध्यापक जब अप्पू को सजा के तौर पर बेंच पर खड़ा कर देते हैं तो बच्चे उसका मज़ाक उड़ाते हैं और पूछे गए प्रश्न का उत्तर समझ न आने पर अप्पू के मुँह से एक ही शब्द निकलता है – 'कंचा'। अप्पू के माध्यम से बाल-सुलभ जिज्ञासा, चंचलता एवं प्रिय वस्तु के प्रति मोह को लेखक ने अत्यंत सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है।

कक्षा सात की पाठ्यपुस्तक से चयनित पाठों, 'कंचा', 'अपूर्व अनुभव' एवं 'चिड़िया की बच्ची' विषय-वस्तु से संबंधित अनौपचारिक साक्षात्कार में शिक्षकों की मिश्रित राय रही। 'चिड़िया की बच्ची' पाठ के संबंध में एक शिक्षक ने बताया कि इस प्रकार की कहानियाँ जीवन के प्रति बच्चों की सोच को एक नई दिशा देती हैं, वहीं दूसरी ओर एक अन्य शिक्षक के मतानुसार यह पाठ सातवीं कक्षा के स्तर का ही नहीं था। इस प्रकार के पाठों को नवीं अथवा दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए। कहानी के माध्यम से माँ और बच्चे के आत्मीय संबंधों पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने का दृष्टिकोण भी शिक्षण अभिमत में सामने आया।

'अपूर्व अनुभव' से संबंधित चर्चा में एक शिक्षिका ने बताया कि यह कहानी बाल-केंद्रित शिक्षा का समर्थन करती है और इसके माध्यम से विद्यार्थियों में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के प्रति संवेदना जागृत की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर एक अन्य लेखक के अनुसार अगर पाठ के प्रमुख पात्रों

के नाम हिंदी में होते तो शायद विद्यार्थियों को ज़्यादा आनंद आता तथा वे पाठ से अधिक जुड़ाव महसूस करते। ज़्यादातर शिक्षकों ने इस पाठ को पाठ्यक्रम में संकलित किए जाने की सराहना की। 'कंचा' पाठ की विषय-वस्तु पर बातचीत करते हुए शिक्षक अभिमत से पता चला कि पाठ का शीर्षक विद्यार्थियों को रोचक लगता है और यह पाठ सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है क्योंकि इस आयु वर्ग के बच्चों को जब कोई चीज़ मोह लेती है तो वे उसी के विचारों में खोए रहते हैं और उसे प्राप्त करने के तरीके खोजते रहते हैं। इस पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों को खेल के साथ-साथ पढ़ाई का महत्त्व भी बताया जा सकता है। एक अन्य शिक्षक ने इस पाठ को साहित्य की दृष्टि से विशेष प्रभावकारी न बताते हुए कहानी के रूप में रोचक बताया। अधिकांश शिक्षकों ने लेखक द्वारा पाठ के मुख्य पात्र अप्पू की मनोदशा का सटीक वर्णन करने की बात भी कहीं।

'चिड़िया की बच्ची' पाठ से संबंधित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान ज़्यादातर विद्यार्थियों ने चिड़िया से जुड़ी कविता एवं कहानियों का ज़िक्र किया। छठी कक्षा की पाठ्यपुस्तक में संकलित 'नादान दोस्त' कहानी चर्चा के केंद्र में रही। कुछ कक्षाओं में 'दो बैलों की कथा' को भी पाठ से जोड़कर देखा गया। पालतू पशु-पक्षियों से संबंधित चर्चा में विद्यार्थियों ने घर में पाले जाने वाले तोते, गाय एवं विशेष रूप से कुत्तों के बारे में बताया।

'अपूर्व अनुभव' की पाठ्यवस्तु को ज़्यादातर कक्षाओं में जीवन संबंधी अनुभवों से जोड़कर समझने का प्रयास दृष्टिगत रहा। विद्यार्थियों ने समाज में शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों को यासूकी चान के पात्र से जोड़कर समझाया। कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि जैसे पाठ में तोत्तो चान अपने मित्र यासूकी चान को पेड़ पर चढ़ाकर उसकी मदद करती है उसी प्रकार उन्होंने भी अलग-अलग परिस्थितियों में अपने ऐसे मित्रों की सहायता करने का प्रयास किया है और ऐसा करके उन्हें बेहद खुशी का अनुभव हुआ। तोत्तो चान द्वारा माँ से नज़रें न मिला पाने वाले प्रसंग को भी विद्यार्थियों ने अपने जीवन से जोड़कर देखा और बताया कि जब वे अपनी मम्मी से कोई बात छिपाते हैं तो उनकी तरफ नहीं देख पाते कि कहीं मम्मी को सच का पता न लग जाए। पाठ के अंतिम प्रसंग में जब यासूकी चान तोत्तो चान को टेलीविजन के विषय में बताता है तो अधिकतर कक्षाओं में विद्यार्थियों को हैरानी हुई कि बिना टी.वी. के कैसे रहा जा सकता है। कुछ विद्यार्थियों ने कहा कि अगर एक दिन के लिए बिजली चली जाए बड़े और बूढ़े सभी बोर हो जाएँगे। विद्यार्थियों ने पाठ के मूल भाव को अपने जीवन से जोड़कर देखा। छठी कक्षा की पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ 'जो देखकर भी नहीं देखते' की चर्चा भी की गई और शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के प्रति सकारात्मक सोच अपनाने पर चर्चा अधगिम की विशेषता रही।

'कंचा' पाठ के प्रसंगों का उपयोग करते हुए कुछ विद्यार्थियों ने यह बताया कि जब भी हम किसी पक्षी को करीब जाकर हाथ लगाना चाहते हैं तो वे डर के कारण फुर्र से उड़ जाते हैं कि कहीं हम उन्हें पकड़ कर पिंजरे में कैद न कर लें। टैगोर की कृति *गोरा* से संबंधित जानकारी भी अधिगम प्रक्रिया का अंग रही।

नन्हीं चिड़िया का अपनी माँ एवं भाई के प्रति मोह लगभग हर कक्षा के विद्यार्थी को स्वाभाविक लगा एवं विद्यार्थियों ने अवसरानुसार अपने जीवन के संबंधित अनुभवों पर चर्चा की। विद्यार्थियों ने बताया कि जब भी वे परेशान होते हैं अथवा अकेलापन महसूस करते हैं तो तुरंत अपनी माँ के पास जाकर बैठ जाते हैं। माँ जब उन्हें प्यार से देखती है तो उनकी परेशानी दूर हो जाती है और उन्हें बहुत अच्छा महसूस होता है।

'कंचा' पाठ की कक्षा परिचर्चा में विद्यार्थियों ने अपने आस-पड़ोस में रहने वाले अनेक ऐसे बच्चों के उदाहरण दिए जो अप्पू की ही तरह दिनभर खेलों की दुनिया में खोए रहते हैं। शीर्षक के कारण विद्यार्थियों को यह कहानी काफ़ी रोचक लगी और पाठ के अनेक प्रसंगों को उन्होंने स्वयं के जीवन से जोड़ कर देखा।

ज़्यादातर कक्षाओं में विद्यार्थियों ने चर्चा के दौरान अपने पंसदीदा खेल जैसे गिल्ली-डंडा, क्रिकेट, बैंडमिंटन आदि के विषय में बताया। अप्पू के कंचों के प्रति मोह को समझते हुए एक छात्रा ने स्पष्टीकरण दिया कि जिस प्रकार अपनी पंसद का काम करने से रोकने पर हमें अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार अप्पू भी कंचे खेलने से रोके जाने पर उदास हो जाता था। कंचों के प्रति अत्यधिक मोह के कारण उसे घर और बाहर डाँट पड़ती थी। पाठ के एक अन्य प्रसंग में जब अप्पू फ़ीस के लिए दिए गए पैसों से कंचे खरीद लेता है तो उसके इस व्यवहार को लगभग सभी कक्षाओं में एकमत से गलत बताया गया। इसी संदर्भ में एक छात्र ने बताया कि एक बार उसके बड़े भाई ने कॉपी खरीदने के लिए दिए गए पैसों से पतंग खरीद ली थी, बाद में जब मम्मी-पापा को पता चला तो उन्होंने भाई को बहुत डाँटा था। इसी प्रकार फ़ीस के पैसों से कंचे खरीदने का अप्पू का फैसला भी सही नहीं था। अच्छा होता कि वह अपनी ज़रूरत के लिए मम्मी से पैसे माँग लेता। अनेक विद्यार्थियों ने अपने पसंदीदा खिलौनों के प्रति लगाव को अप्पू के कंचों से मोह को जोड़ कर समझा।

कक्षा संव्यवहार के वस्तुस्थिति परक अध्ययन एवं विश्लेषण से पता चला कि कुछ विद्यालयों में भाषा अध्यापकों ने शोधार्थी के साथ हुई अनौपचारिक बातचीत में जो पाठ संबंधी मत दिए थे वह उनके द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधियों से बहुधा भिन्न थे। समयाभाव की मज़बूरी दिखाते हुए विद्यार्थियों की भागीदारी को केवल पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने मात्र तक ही सीमित कर दिया गया। कुछ स्थानों पर विद्यार्थी विषय-वस्तु की प्रासंगिकता समझकर अपने स्वयं के जीवन से संबंधित घटनाओं को बताना चाह रहे थे, परंतु उनकी मुखरता को विराम दे दिया गया।

शिक्षक अभिमत में अंतर से भी अधिगम प्रक्रिया में स्वाभाविक अंतर आ जाता है। जैसा टी. पदभनाभन की कहानी 'कंचा' के संबंध में जहाँ एक विद्यालय के शिक्षक का मत था कि शीर्षक के कारण यह कहानी विद्यार्थियों को रोचक लग सकती है, परंतु साहित्य की दृष्टि से विशेष प्रभावकारी नहीं लगती। वहीं एक अन्य विद्यालय के शिक्षक के मतानुसार कहानी का शीर्षक ही इतना रोचक है कि विद्यार्थी तुरंत पाठ पढ़ने को आतुर हो जाते हैं। साथ ही ऐसी कहानियों से विद्यार्थियों को खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी ध्यान लगाने की बात समझाई जा सकती है। अत: कहा जा सकता है कि पाठ के प्रति शिक्षकों की सोच, नज़रिया,

कक्षा में विद्यार्थियों के साथ होने वाली अंत:क्रिया पर भी असर डालता है।

प्रेक्षण के दौरान कुछ कक्षाएँ ऐसी भी रहीं जहाँ शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की सक्रिय भागीदारी से अधिगम प्रक्रिया अत्यंत सरस और रोचक रही। शिक्षकों ने विद्यार्थियों द्वारा कही गई बातों को पुन: पाठ के उन हिस्सों को विस्तार देकर समझाया जिनसे जोड़कर विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों को बताया था।

विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों को कक्षा प्रक्रिया का भाग बनाए जाने की दृष्टि से कुछ सुझाव दिए गए हैं—

- विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवों को शैक्षिक प्रक्रिया का अंग बनाए जाने की दृष्टि से साहित्यिक विधाओं के उन अंशों को पाठ्यपुस्तकों में संकलित किया जाना चाहिए, जिन्हें विद्यार्थी अपने जीवन से जोड़कर देख सकें। जैसे कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक में संकलित संस्करण 'बचपन' एवं प्रेमचंद की कहानी 'नादान दोस्त' विद्यार्थियों को पाठ से जुड़ाव का अवसर भी देती हैं साथ ही उनमें साहित्य के प्रति प्रेम की भावना भी उत्पन्न करती हैं।
- विद्यार्थियों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कक्षाओं में अलग-अलग कथाकारों की रचनाओं को संकलित किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के अनुभवों को संसाधन के रूप में प्रयोग करते हुए अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता है। आवश्यकता है कि शिक्षक कक्षा संव्यवहार के दौरान अधिक से अधिक विद्यार्थियों को अपने अनुभव बताने के लिए प्रेरित करें और पुनर्बलन के माध्यम से उनका उत्साहवर्धन करें।

कक्षा में इस प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी बात कहने का अवसर मिल सके। अधिगम प्रक्रिया केवल कुछ ही विद्यार्थियों तक ही सीमित न रहे।

केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ही नहीं, अपितु अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में भी विद्यार्थियों को अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर कार्य करने के अवसर दिए जाने चाहिए। न केवल मौखिक अपतु लिखित रूप में भी विद्यार्थियों को अपने विचारों को अभिव्यक्त किए जाने का अवसर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2017. 'अपूर्ण अनुभव'. *वसंत भाग 2* कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपूस्तक. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.